

---

# Sanskritam Lokaranjakam

---

## संस्कृतं लोकरञ्जकम्

---

### Document Information

---

Text title : Sanskritam Lokaranjakam

File name : saMskRRitamlokaranjakam.itx

Category : misc, sanskritgeet

Location : doc\_z\_misc\_general

Author : muthalapuraM mohanadAsa

Acknowledge-Permission: Muthalapuram Mohanadasa muthalapurammohandas [at] gmail.com

Latest update : August 11, 2024

Send corrections to : sanskrit at cheerful dot c om

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---


Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

August 12, 2024

*sanskritdocuments.org*

---

——  
संस्कृतं लोकरञ्जकम्



जयतु भारतं विश्वमोहनं  
नमतु सादरं भारताम्बिकाम् ।  
भजतु संस्कृतं वेदमातरं  
पठतु संस्कृतं लोकरञ्जकम् ॥

सदुपदिश्यते मातृवत् सदा  
हितकरी दिशं दिशति संस्कृतम् ।  
पठतु संस्कृतं ज्ञानलब्धये  
विनयमाप्नुयात् विश्वभाषया ॥

यदिह विद्यते तद्भवेत्कचित्  
यदिह नासते नास्ति तत् क्वचित् ।  
अतिमहत्तरमस्य वैभवं  
अतुलमक्षयं भजत संस्कृतम् ॥ ३ ॥

हितोपदेशकैर्सुभाषितैर्युतं  
हृदयरञ्जकैः काव्यतल्लजैः ।  
विपुलवैभवं शास्त्रसम्मितं  
संस्कृतं सदा मोदायकम् ॥ ४ ॥

भुवि कदापि न क्षरति संस्कृतं  
अमृतशोषणं कथं भविष्यति? ।  
त्यजतु संशयं भजतु प्रत्ययं  
पठतु संस्कृतं स्वास्थ्यमाप्नुयात् ॥ ५ ॥

- मुथलपुरं मोहनदास

*SanskritaM Lokaranjakam*

pdf was typeset on August 12, 2024

Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

